साक्ष्य आधी सदी का

कुमार महादेव व्यास
मुम्बई

प्रवासी राजस्थानी समाज जहां कहीं भी गया है उसने वहां भी कर्म भूमि पर सेवा के बिरवे रोपे हैं। समाज सेवा राजस्थानी माटी के जन्मे जायों में तासीर के रूप में कूट-कूट कर भरी है। आज से 50 वर्ष पूर्व प्रवासी राजस्थानी समाज के दूरदृष्टाओं ने मुंबई शहर से सुदूर पश्चिम अंधेरी के जे.बी. नगर में एक शैक्षणिक स्कूल की आधार शिला रखी जो 50 विद्यार्थियों से शुरू होकर आगे बढ़ता ही गया। स्व. मदनलाल जालान ने जहां इसकी नींव की ईंट रखी, वहीं सेठ घनश्याम दास पोद्दार के नेतृत्व में 1953 में प्राथमिक पाठशाला प्रगति पथ पर आगे बढ़ी। सेठ श्री निवास

पुरखों की चिर-स्मृति

सेवा संघ ने अपने पुरखों के नाम को स्वर्णाक्षरों में अंकित करते हुए इन शिक्षण संस्थाओं को नाम भी दिए हैं- * जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबडेवाला विश्वविद्यालय, झुंझनूं * श्रीमती परमेश्वरी देवी दुर्गादत्त टिबडेवाला लायन्स जूहू कॉलेज ऑफ कॉमर्स एण्ड साइंस * श्री निवास बगड़ा का जूनियर कॉलेज ऑफ आर्ट्स कॉमर्स एण्ड साइंस * श्री घनश्याम दास पोद्दार विद्यालय * श्री गौरीशंकर केडिया इंग्लिश स्कूल * श्रीमती गिन्नी बाई नारायण दास क्यामसरीया एम.बी.ए. कॉलेज * श्री राजस्थानी सेवा संघ इन्स्टीट्यूट ऑफ मास कम्यूनिकेशन * श्री राजस्थानी सेवा संघ गखारे इन्स्टीट्यूट ऑफ कैरियर एज्यूकेशन एण्ड डवलपमेंट * श्री लक्ष्मीनारायण संस्कृत पाठशाला।

टिबड़ेवाला को सम्मानित करतीं राष्ट्रपति प्रतिभा पाटील

इरादों के धनी 'आयरन' मैन

फौलाद के क्षेत्र में काम करते करते श्री राजस्थानी सेवा संघ के अध्यक्ष विनोद टिबड़ेवाला फौलादी संकल्पों के भी धनी हो गए हैं और फौलादी संकल्पों को सजाना उनके जीवन का उज्ज्वल लक्ष्य बन गया है। झुंझुनूं के समीप चूरू-बिसाऊ रोड पर स्थापित जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबडेवाला (जे.जे.टी.) विश्वविद्यालय आज राजस्थान का शैक्षणिक हब बनता जा रहा है। टिबडेवाला का मानना है कि यदि राज्य सरकार थोड़ी सी मदद करे तो वे इस यूनिवर्सिटी को ऑक्सफोर्ड की तर्ज पर खड़ा कर सकते हैं। यदि राज्य सरकार फालतू पड़ी गोचर भूमि का एक हिस्सा भी जेजेटी को प्रदान करे, तो पूरे संभाग के विकास का सपना संजो सकते हैं।